सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

# सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

जब मैंने रसना का फल पाया,
भाव चाव से राम राम जप अपना आप जगाया ॥१॥
राम राम की ध्वनि लगन में लव लीनता लाकर।
राम नाम मधुरतम जप कर जीना सफल बनाया ॥२॥
राम नाम रस चख रसना ने रस सरसानी होकर।
सभी रसों का सार सुधा सम राम प्रेम बनाया ॥३॥
राम नाम खिलते रसना पर निश दिन सांझ सवेरे।
चलते फिरते सोते जागते सनी नाम से काया ॥४॥
भले भाव भीतर भर आये भक्ति भाव उमड़ाया।
चम-चम चमकी चित्त-चारुता, निश्चय
चांद चढ़ आया ॥५॥

(परम पूजनीय स्वामी जी
महाराज की भजन डायरी से)

## इस अंक में पढ़िए



(पिछले अंक में प्रकाशित परम पूजनीय महाराज जी का प्रवचन 'प्रशंसा साधक के लिए घातक' का दूसरा भाग अगले अंक में छपेगा।)

मूल्य (Price) ₹ 5

*Wish you a happy Vyas Poornima. May you ever remain blessed. Jai Jai Ram.*

*Pr. Pr.*
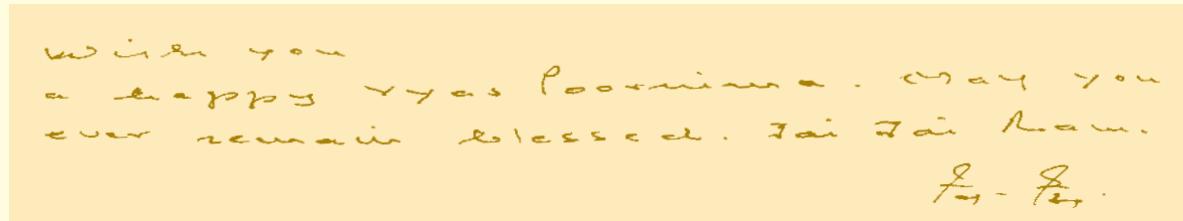
# व्यास पूर्णिमा

**27 जुलाई 2018**

विश्वामित्र

व्यास पूजा—का पुण्य पर्व महर्षि व्यासदेव के आध्यात्मिक उपकारों के लिए उनके श्री चरणों में श्रद्धा—सुमन अर्पित करने का दिवस है। उनके अमर सन्देश को प्रत्येक साधक जीवन में उतारे – "मैं और मेरा बन्धन का कारण, तू और तेरा मुक्ति का साधन"। आज जगद्गुरु परमेश्वर के पूजन का पर्व है। स्वामी जी महाराज के अनुसार आज का यह मांगलिक दिन आध्यात्मिक सम्बन्ध स्मरण करने के लिए नियत है अर्थात गुरु अथवा मार्ग—दर्शक एवं शिष्य के अपने अपने कर्तव्य को याद करने का दिवस है।

जब तक सोना सुनार के पास, लोहा लोहार के पास, कपड़ा दर्जी के पास न जाये, उसे आकार नहीं मिलता। तद्वत शिष्य जब तक अपने आपको गुरु के हवाले नहीं कर देता, अपने अहं को मिटा, समर्पित नहीं कर देता, तब तक वह कृपा—पात्र नहीं बन पाता। गुरु वह जो अनुभूत हो, समदृष्टि हो, सर्वत्र राम—दर्शन करने वाला संत हो, अखिल विश्व के लिए हृदय से प्रेम—गंगा प्रवाहित करने वाला हो, दयालु, क्षमावान एवं शान्त हो। स्वामी जी फरमाते हैं :

**गुरु तो ऐसा चाहिए, स्वार्थ से हो पार।**
**परमार्थ में रत रहे, कर पर हित उपकार।।**
**वास करे जिस स्थान में, कर हरि नाम विख्यात।**
**ईश प्रेम बांटे सदा, पूछे जात न पात।।**
**राम-रंग रंगा रहे, जो आय करे लाल।**
**ओंकार निराकार को, जाने राम अकाल।।**

*भक्ति प्रकाश 9, 10, 11, पृ 52*

राह दिखाने वाले का चरित्र, स्वभाव, आचरण ऐसा हो जिसका प्रत्येक मानव अनुकरण कर सके। एक सम्राट जंगल में शिकार के लिए गये। रात को वहीं रुकना पड़ा। भोजन की तैयारी शुरु हो गयी। रसोईये के पास सारा सामान, पर नमक भूल गया, मांगने के लिए पास वाले गाँव में जाने लगा तो राजा ने बुलाकर कहा, "देखो, जितना नमक लाओ, उतने पैसे दे आना।" रसोईये ने तत्काल कहा, "हजूर नमक के कौन पैसे लेगा"? सम्राट ने क्रुद्ध होकर कहा, "भाई! छोटी बात का किसी को फर्क न पड़े, पर मुझे पड़ेगा। कल को अधीन काम करने वाले इसी प्रकार बिना मूल्य चुकाए चीज़ें लेनी शुरु कर देंगे और यह कहेंगे कि सम्राट ने भी तो ऐसा किया था। एक गलत रिवाज़ शुरु हो जाएगा।"

मार्ग—दर्शक को पग पग पर चौकन्ना रहना चाहिए। जो सावधान रहे वही है साधक। संत की शरण में जब कोई रज—तुल्य विनम्र होकर जाता है, तो संत साधक को अपने जैसा बना देता है। साधक सीखने के लिए जाए, सिखाने के लिए नहीं। चिरकाल संगति उपरान्त भी लोग लाभ नहीं उठा पाए क्योंकि बहुधा आत्मिक—उन्नति के लिए नहीं, स्वार्थ—पूर्ति के लिए जाते हैं। ऐसों में प्रेम नहीं, ईर्ष्या—द्वेष भरा होता है, ये दूसरों को नीचा दिखाने, भीतर से काटने में प्रयत्नशील रहते हैं। अर्थात गुरु के सामने कुछ और भीतर से भिन्न होते हैं। गुरु की समीपता में दुर्बलताएँ और दुर्गुण दूर करें। दुर्विचार रहित बनें। यदि नहीं तो समय व्यर्थ।

सब से प्रेम करना सीखें, तप, त्याग सीखें ताकि जीवन शान्तिमय हो। हम कहलाते तो शिष्य हैं, पर बन कर रहते हैं गुरु, अतः अपने आपको बड़ा सिद्ध, प्रदर्शित करने की चेष्टा ही उनकी साधना। गुरु के लिए इससे बढ़ कर दुःख का कारण कोई नहीं, जब वह अपने शिष्यों को अग्र कहलाने व बनने के लिए लड़ते–झगड़ते देखता है। गुरु की उपस्थिति में राम–नाम अविराम अपनी जिह्वा पर रखें, अपना निरीक्षण करें तथा दुर्गुण–त्रुटियों को दूर करने के लिए, मन के पवित्रीकरण के लिए साधना करें, कृपा मांगें। जब शिष्य मन्त्र की आराधना सतत, नित्य एवं निरन्तर करेगा, तभी घातक दुर्विचारों, दुष्वृत्तियों, विकारों व कामनाओं से छुटकारा पायेगा। यदि गुरु आज्ञा मान ऐसा करेगा, तो जीवन दिव्यता से, शान्ति एवं विवेक से प्रबुद्ध होगा। गुरु–शिष्य का यही सही सम्बन्ध है अन्यथा लोग बेकार चक्कर लगा, गुरु को परेशान करते हैं तथा अपना समय बर्बाद करते हैं। मात्र यह कहना कि हम स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के शिष्य हैं, पर्याप्त नहीं, उनके आदेशों, उपदेशों का अनुकरण करें, सिद्धान्तों पर, चरण–चिन्हों पर चलें तथा नियमों का पालन करें। कृपा–पात्रता के लिए यह हमारा परम कर्तव्य है। स्वामी जी फरमाते हैं :

**सच्चे संत की शरण में, बैठ मिले विश्राम।**
**मन मांगा फल तब मिले, जपे राम का नाम।।**

*भक्ति प्रकाश 7, पृ 52*

राम–नाम जप के माध्यम से अपनी तार परमेश्वर श्री राम से सदा जोड़े रखें। अति शुभ कामनाएँ। व्यास–पूर्णिमा के पुण्य पर्व पर स्वामी जी महाराज के परिवार के सभी सदस्यों को सादर चरण वन्दना एवं हार्दिक बधाई।

अपने गुरुजनों का गुलाम

*(21 जुलाई, 2005 व्यास पूर्णिमा पर पूजनीय श्री महाराज जी का संदेश)*

## नमो नमः गुरुदेव !

*विभिन्न केन्द्रों से जिन बच्चों ने गुरुजनों को श्रद्धांजलि अर्पित की है उनका धन्यवाद।*

# महानिर्वाण दिवस
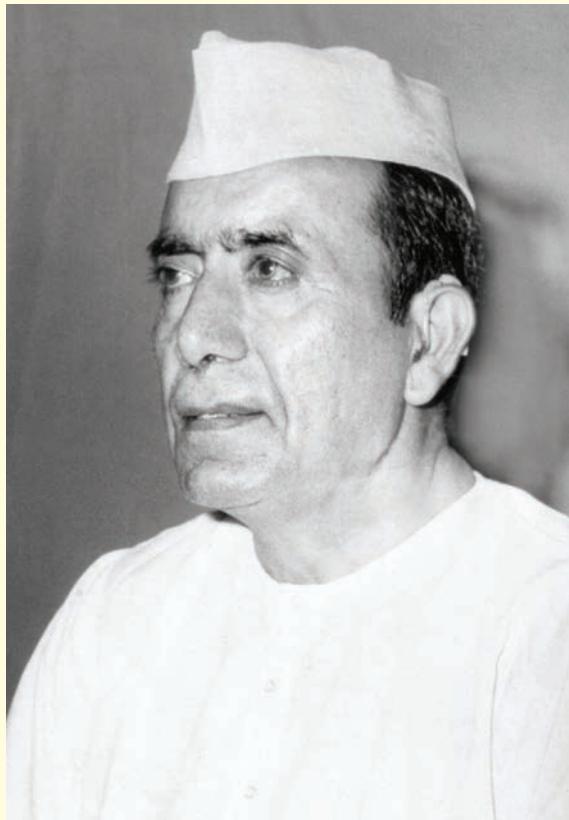
29 जुलाई 1993
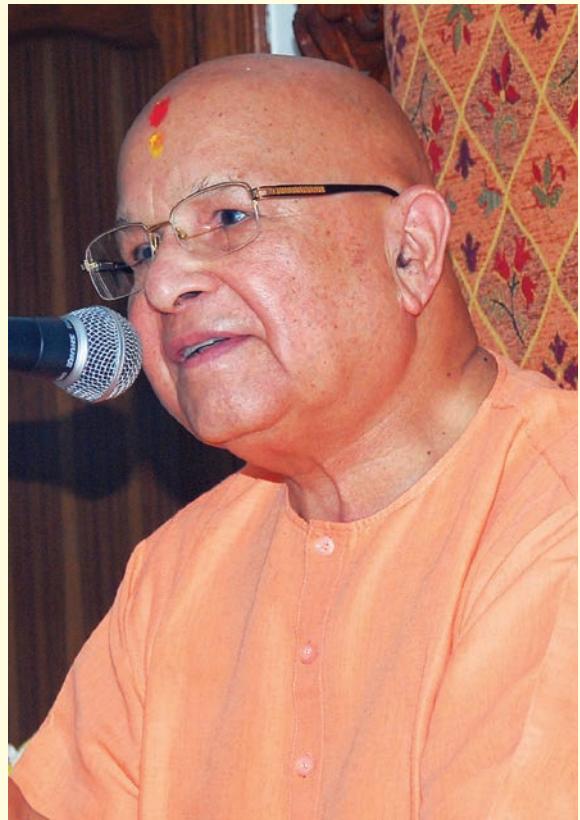
2 जुलाई 2012

## कृतज्ञता

उस का रहूँ कृतज्ञ मैं, मानूँ अति आभार।
जिसने अति हित प्रेम से, मुझ पर कर उपकार।।

धन्यवाद उस सुजन का, करूँ आदर सम्मान।
जिसने आत्मबोध का, दिया मुझे शुभ ज्ञान।।

वारे जाऊँ संत के, जो देवे शुभ नाम।
बाँह पकड़ सुस्थिर करे, राम बतावे धाम।।

*भक्ति प्रकाश 1, 4, 10, पृ 102*

# वाणी

हे श्री राम, हे श्री राम - मधुर वाणी हे श्री राम
हे श्री राम, हे श्री राम - पवित्र करनी हे श्री राम
[मीठी वाणी, निर्मल (दिव्य) दृष्टि, दिव्य-जीवन]

सदा स्मरणीय, परम पूजनीय हमारे त्रिमूर्ति सद्गुरु सच्चे आध्यामिक संत और सरल सत्पुरुष थे। ऐसे सत्पुरुषों का संग ही सत्संग कहा जाता है। सत्संग की महिमा वाणी से है। हमारे गुरुजनों ने समय–समय पर अपने प्रवचनों में वाणी के महत्व पर विशेष बल दिया है। उनके मत में वाणी का संयम, वाणी की नम्रता और मितव्ययी होना साधनामय जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। परम वन्दनीय स्वामी सत्यानन्द जी की वाणी में कुछ भी व्यक्त करने की अभूतपूर्व शक्ति थी और उनकी वाणी इतनी प्रभावशाली थी कि उनके सरल सत्य उपदेश से प्रभावित हो कर सहस्त्रों लोगों का जीवन बदल गया। परम पूजनीय प्रेम जी महाराज वही बोलते थे जो स्वयं अनुभूत किया हो। वे नपे–तुले, सधे शब्दों में अपनी बात अत्यंत प्रभावशाली तरीके से कह देते। उनकी अति शिष्ट कोमल वाणी ने उनके असंख्य साधकों पर एक अमिट छाप छोड़ी है। परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी में दोनों गुरुजनों का समन्वय था। उनका सदा यह प्रयत्न रहता कि साधकों की सोच की दिशा को परमेश्वर की ओर मोड़ा जाए। अपने सरल, आग्रहपूर्वक शब्दों और साधकों के दैनिक जीवन के उदाहरणों से महाराज जी साधकों को सोचने और अपने जीवन में झाँकने के लिए विवश कर देते थे। आज भी हमारे त्रिमूर्ति सद्गुरुओं की वाणी साधकों को अपने जीवन को साधनामय बनाने में सहायक हो रही है। शत् शत् नमन ऐसे सद्गुरुओं को। परम पूजनीय स्वामी जी ने सत्य ही कहा है :

कथा कीर्तन प्रेम से, सुनिए कोसों जाय।
सन्त सुसज्जन संग में, जाए दूर से धाय।।

सत्संगति में जाइए, मन दे सुनिए ज्ञान।
कर्मयोग सुभक्ति धर्म, धारे धर कर ध्यान।।

शुभ संगति ही गंग है, ज्ञान अभंग तरंग।
भक्ति भाव भागीरथी, विमल करे सब अंग।।

*भक्ति प्रकाश 5, 6, 8, पृ 160*

## VOICE

### सत्यानन्द

There should be sweetness in the voice of the spiritual aspirant. In order to make an impression on others as also God, there should be sweetness in the voice of the spiritual aspirant. Nowadays in India there is a dearth of people with powerful faculty of speech. Only a heroic person's speech can be strong and influential. Anything which is said must be said with conviction.

When Germany started invading nations, at that time Hitler gave a speech on the radio for two hours. Although he spoke in German, which I could not understand, but his voice had such excellent modulation that he kept me engrossed. There should be so much sweetness in a spiritual aspirant's voice that he can even win over Ram. Some attain this in an ecstatic state.

*('वाणी', प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 110)*

# साधना में स्थिरता

साधना सत्संग में आने वालों में ये भावना होनी चाहिए कि जहाँ कहीं भी रहें प्रेम से रहें। कोई कहे कि क्या कोई विशेषता है जो साधना सत्संगों में जाते हैं ? दूसरों की सेवा भी करते हैं, जब कभी जरुरत हो। कोई ऐसा भी बरखुरदार होगा जो कोई बात हो तो झगड़ा करने लगे। दूसरे लोग सोचते हैं कि वे सत्संग में जाकर क्या करते हैं? एक मछली सारे पानी को खराब करती है।

दूध में उबाल आता है, वृत्तियों में भी उबाल आता है– इनको वश में नहीं कर पाए तो सत्संग में आने का क्या लाभ ?

लुधियाना से एक सेवक आया, रामायण की कथा में नुक़्ताचीनी की। महाराज ने कहा कि आपको माफी माँगनी चाहिए, वह तो माना नहीं। महाराज जी ने साधना सत्संग में आना बंद कर दिया। यह अभिमान होता है जो दूसरों के आगे सीस नहीं झुकता।

वैसे तो दक्षिण भारत में जाएँ तो किसी का कपड़ा भी लग जाए तो दस बार माफी माँगते हैं। हमारी आदतें कुछ ऐसी खुरदुरी हैं कि पता नहीं चलता। छोटी छोटी बातें सीखने की होती हैं। यदि सत्संग में आकर वैसे ही रहें, जैसे गलियों के बच्चे। माहात्म्य यही है कि कितना सुधरता है कोई ?

एक बार किसी से मिलने का अवसर मिला तो वे कहने लगे कि जब से मेरी धर्मपत्नी सत्संग में जाने लगी है, घर में लड़ाई नहीं होती। साधना सत्संग में जाने का यही लाभ है, वैर भाव का काँटा चुभा रहा तो कितना भी जाप किया जाए तो क्या लाभ? वृत्तियों पर काबू होना चाहिए। अपने आपको हर कोई बड़ा कहता है, दूसरे की निन्दा न करें कोई बढ़ाई करता है, जिनको शौक होता, उनकी कमज़ोरी का फायदा उठा कर और फायदा उठाते हैं। जो समझदार होगा वह समझ जाएगा। अपनी बड़ाई न सुनिएगा, वैर द्वेष न करके, प्रेम भाव से रहें। प्रीति और करुणा भाव से रहें। यदि कोई शत्रुता भी करे उससे भी मित्रता ही दर्शानी चाहिए।

यदि कोई कुछ कहता भी है, निन्दा और बड़ाई में सम रहना चाहिए। यही समझना चाहिए, कुएँ में जैसा जल होगा वैसा ही निकलेगा। जो उसने कहना था कह दिया। अपने आपको परमेश्वर के हवाले कर दिया तो किसी की बात का बुरा क्यों मनाना।

महाराज ने स्थितप्रज्ञ के लक्षण छपवाए, सीखा कुछ नहीं तो समय व्यर्थ ही गया। लोग कहते हैं कि समाधि लग जाए– पर समाधि यही है कि अगर कोई कुछ कहे तो डाँवाडोल न हुआ।

परमेश्वर की कृपा से यह कृपा होती है। स्थिरता, सम रहना अपने आप आ जाएगा। तेरी सब पर कृपा हो, परमेश्वर तू ही कृपा कर, कृपा कर।

*(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के प्रवचन, 26.7.1969 रात्रि 8.30 बजे)* ■

# वाणी : व्यक्तित्व की पहचान

अभिमानी शब्द कभी मत बोलना, कठोर कभी नहीं बोलना, कटु शब्द कभी नहीं बोलना और क्रोधी शब्द कभी नहीं बोलना। वाणी पर पूरा अंकुश होना चाहिए। साधना का एक महान अंग है यह। जप के माध्यम से हम वाणी को सिधाते हैं। जप इसलिए करते हैं ताकि हमारी जिह्वा को जो गंदी–मंदी, आदतें पड़ी हुई हैं, उसका स्वभाव बदले। इसकी आदतें बदलें। निंदा न करें, चुगली न करें, अभिमानी, ईर्ष्यालु शब्द न बोलें। दूसरों के घर जलाने वाले काम न करें। फूट फैलाने वाले शब्द न बोलें। बड़ी प्रवीण है यह सब कुछ करने में। करती है।

दो दुकानदार हैं, एक की मिर्ची की दुकान है और पास ही पड़ोस में एक–दो दुकानें छोड़ कर शहद बेचने वाले की दुकान है। शहद बेचने वाले की दुकान पर कोई इक्का–दुक्का ग्राहक होंगे पर मिर्ची वाली दुकान पर बड़ी भारी भीड़ लगी रहती है। ग्राहक घूम–फिर कर उसी की दुकान पर जाते हैं। शहद बेचने वाले की दुकान पर कोई–कोई जाता है। आज इस दुकानदार ने किसी से पूछा, ''भाई! मेरी समझ में नहीं आता, क्या कारण होगा? क्यों उसकी दुकान पर इतनी भीड़ लगी रहती है? क्यों उसकी दुकान पर ग्राहक ही ग्राहक दिखाई देते हैं ? हालांकि वह मिर्ची बेचने वाला है और मैं तो मीठी चीज़ बेचता हूँ। फिर भी मेरी दुकान पर इक्का–दुक्का ही ग्राहक आते हैं। वह ग्राहक कहता है,''लाला! ऐसा लगता है कि मिर्ची बेचनेवाला, मिर्ची में शहद घोल कर बेचता है। उसकी वाणी में इतनी मधुरता है कि उसकी वाणी के प्रभाव से उसकी मिर्ची की सेल इस प्रकार की है। परन्तु लगता है तू शहद भी बेचता है तो मिर्ची डाल कर बेचता है, इसलिए तेरी दुकान पर शहद खरीदने के लिए कोई ग्राहक नहीं आता।''

कितनी महत्वपूर्ण बातें हैं। अपनी वाणी पर पूरा संयम होना चाहिए। संत महात्मा यहाँ तक कहते हैं वाणी से व्यक्ति के वास्तविक व्यक्तित्व की पहचान होती है। ऐसा होता होगा तो ही तो संतों महात्माओं ने इस प्रकार कहा है।

एक दिन एक राजा, एक मंत्री और उनके साथ एक नौकर तीनों वन में गए हैं। राजा के पास घोड़ा है, तीनों के पास होगा। राजा जंगल का दृश्य देख कर खो सा गया है बहुत अच्छा लगा उसे। कहने को जंगल, पर बहुत सुन्दर वाटिका। बहुत systematic जैसे बगीचे में होता है। जंगल तो जंगल ही होता है; जंगली। लेकिन बगीचा तो जंगली नहीं होता है। बगीचा तो बहुत systematic होता है। कहीं–कहीं, Light लगी होती है, एक ही तरह के पेड़ होते हैं, एक तरह के फूल होते हैं, बड़े कतारों में लगे होते हैं, इत्यादि इत्यादि। ऐसा ही वह जंगल था।

राजा उसे देख कर तो खो से गए हैं। अचानक उनकी नज़र दूर एक हिरण पर पड़ी। राजा उसे पकड़ने के लिए दौड़ पड़े। राजा घोड़े पर थे, खूब तेज़ घोड़ा दौड़ाया, लेकिन हिरण भी कम दौड़ने वाला नहीं था। उसकी speed भी बहुत अच्छी थी। दूर राजा को कहीं ले गया, हिरण पकड़ा भी नहीं गया लेकिन राजा को दूर लेकर चला गया। इधर मंत्री एवं नौकर दोनों इंतज़ार कर रहे हैं राजा साहिब का। जब राजा को लौटने में देरी लगी तो मंत्री महोदय ने कहा नौकर से, ''जाओ राजा साहिब को ढूंढो।'' नौकर निकल पड़ा है, राजा साहब को ढूंढने। दूर जा कर उसे एक कुटिया नजर आती है। देखता है उसके बाहर एक दृष्टिहीन महात्मा बैठे हुए हैं। यह नौकर जाकर उन्हें कहता है, ''अरे ! ओ अन्धे! इधर से घोड़ा निकल के तो नहीं गया। क्या तूने देखा है इधर से किसी को निकलते हुए''। प्रश्न ही कैसा था ? एक नेत्रहीन व्यक्ति, एक दृष्टिहीन व्यक्ति क्या देखेगा ? प्रश्न गलत है उसका। महात्मा ने कहा, ''मुझे माफ करें, मुझे पता नहीं।''

नौकर को लौटने में देरी हो गई तो मंत्री जी निकल पड़े है उसे ढूंढने के लिए। अब नौकर को भी ढूंढना है और राजा साहिब को भी। मंत्री साहब भी उसी कुटिया के सामने पहुंचे हैं। कहते हैं, ''ओ साधू! क्या इधर से कोई व्यक्ति निकले हैं?'' हाथ जोड़ कर कहता है, ''मंत्री महोदय,

आपका नौकर आया था इसके इलावा मुझे और किसी का पता नहीं।'' थोडी देर के बाद, उसी कुटिया के आगे राजा स्वयं आए हैं। आकर हाथ जोड़ कर कहते हैं। साधु बाबा! चरणों में प्रणाम स्वीकार करें। कोई मुझे खोजते–खोजते इधर से निकला तो नहीं?'' ''हाँ राजा साहिब! सबसे पहले आपका नौकर आया था, उसके बाद फिर आपके मंत्री आए थे, अब आप स्वयं पधारे हैं।'' साधू ने कहा।

राजा, मंत्री और नौकर, तीनों इकट्ठे हुए हैं, मन में गहरी सोच, एक दृष्टिहीन व्यक्ति को कैसे पता लग गया कि एक राजा है, एक मंत्री और एक नौकर? चलो उन्हीं से जाकर पूछते हैं। तीनों मिल कर उस दृष्टिहीन महात्मा के पास पहुंचे हैं। जाकर बैठ गए। राजा साहिब ने पूछा, ''महात्मन ! आपको दिखाई तो देता नहीं, फिर कैसे पता लग गया कि हममें से एक राजा है, एक मंत्री और एक नौकर?'' महात्मा कहते हैं, ''राजा साहिब! व्यक्ति का व्यक्तित्व जानने के लिए दृष्टि की आवश्यकता नहीं, वाणी पर्याप्त है। नौकर ने आकर कहा अरे ओ अंधे! मंत्री थोडा समझदार था तो उसने कहा ओ साधू। आपने कहा साधु महाराज, बाबा प्रणाम।

व्यक्ति का वज़न तोलने के लिए दृष्टि की आवश्यकता नहीं। उसकी वाणी पर्याप्त है उसका वज़न बताने के लिए। कितनी महत्वपूर्ण है उसकी वाणी। बिना आँख, बिना दृष्टि के भी व्यक्ति का व्यक्तित्व पहचाना जाता है, इसके माध्यम से। यूँ भी कहिएगा वाणी हमारे आचरण, हमारे व्यवहार की प्रतीक है। हमारा स्वभाव किस प्रकार है इसे आप कितनी देर तक छुपा कर रखेंगे? कितनी देर तक उसे बदल कर रखोगे? एक न एक दिन असलियत आ कर रहती है। पता लग जाता है कि यह व्यक्ति क्रोधी है, यह अभिमानी है, यह व्यक्ति ऊपर से नम्र बन रहा है, वास्तव में है नहीं, इत्यादि इत्यादि। साधकजनो ! ये वाणी, ये जिह्वा, इसको सिधाया न जाए तो बड़ी क्लेश कष्टदायी हो सकती है।

बहुत पुरानी बात बचपन में कभी सुनी थी। एक किसी को सिगरेट सुलगाने के लिए माचिस की आवश्यकता थी। बल्कि एक मैच स्टिक की आवश्यकता थी। सिगरेट पीने वाले अकसर इधर पूछते हैं, उधर पूछते हैं, क्या आपके पास मैचबोक्स है जी। या किसी का सुलगता हुआ सिगरेट हो तो उसी को कहते हैं आप सिगरेट दे दीजिएगा, थोड़ा मैं भी अपना सिगरेट सुलगा लूँ।

किसी को सिगरेट सुलगानी थी तो वह एक व्यक्ति के पास गए और कहा,''आपके पास मैचबोक्स है तो मुझे एक मैच स्टिक दे दीजिए सिगरेट सुलगाने के लिए।'' ''वो सामने एक व्यक्ति खड़ा है उसके पास है, आप उसके पास चले जाओ। उससे ले लो।'' जिसे सिगरेट जलानी थी वह बताए गए व्यक्ति के पास जाता है। पूछा नहीं कि आपके पास है या नहीं। उसके पास जाकर कहा कि मेहरबानी करके मुझे मैचबोक्स दे दीजिए। उस व्यक्ति ने मना कर दिया और कहा कि उसके पास मैचबोक्स नहीं है। अब यह व्यक्ति जिसने सिगरेट सुलगानी थी वापिस पहले व्यक्ति के पास गया और बताया कि उसके पास तो मैचबोक्स है नहीं। पहले व्यक्ति ने कहा,''झूठ बोलता है, फिर जाओ उसके पास।'' सिगरेट पीने वाला व्यक्ति बताए गए व्यक्ति के पास फिर चला गया। इस प्रकार दो–तीन चक्कर लगे। आखिर उस दूसरे व्यक्ति ने जिसके पास मैचबोक्स मांगने वाला बार–बार जा रहा था, उससे पूछा, ''तुम्हें कौन भेज रहा है मेरे पास बार–बार?'' मैचबोक्स मांगने वाले ने पहले वाले व्यक्ति की ओर इशारा किया। दूसरे वाले व्यक्ति ने कहा कि उसके पास जाकर पूछते हैं। दूसरे व्यक्ति ने पहले वाले व्यक्ति को डाँटा,''मेरे पास मैचबौक्स तो है नहीं क्यों बार बार उसे मेरे पास भेज रहे हो।'' पहले वाले व्यक्ति ने कहा,''माफ करना, मैंने तो आपके बारे में सुना है कि आपके पास ऐसा मैचबोक्स है, जिसने अनेक घर जला कर रख दिए और आप एक मैच स्टिक इसे सिगरेट सुलगाने के लिए नहीं दे सकते?''

किसकी ओर इशारा था आपके पास ऐसा मैचबोक्स है जिसने अनेक घर जला कर राख कर दिए हैं ? मानो फूट फैलाने वाली, दूसरे के घरों में आग लगाने वाली, इधर की बात उधर, उधर की बात इधर करने वाले जैसे व्यक्ति होते हैं। क्या आपने ऐसे लोग देखे नहीं हैं? हम सबके जीवन में ऐसा कोई व्यक्ति देखने–सुनने को मिल जाता है, जिसका काम यही है दूसरों के घरों को, दूसरों के परिवारों को जला दे।

(प्रवचन) ■

# परम पूजनीय महाराज जी के पत्र का अंश

Question: Maharaj Ji, people speak rudely to me and I reciprocate harshly. Please tell me what I should do?

All loving Ram Ram Ji.

What a great pleasure to receive your e-mail message! Why should you act silly when you are not? You are a darling child of my Ram Ji. Please donot bother about the mistakes of others, we have to be careful ourselves that we donot commit any. Never be rude, be loving giving & forgiving.

Best wishes for everything. Must repeat Ram Ram Ram Ram. Don't you like chanting Amritvani? All love to you & namaskaar to your parents.

[illegible]

Manali

**प्र.: महाराज जी, लोग मुझसे बहुत रुखाई से बोलते हैं। कृपया बताएँ मैं क्या करुँ ?**

**पूजनीय महाराज जी :** सप्रेम जय जय राम। कितनी खुशी हुई आपका email सन्देश पाकर। आप बचकाना हरकतें क्यों करती हैं जबकि आप ऐसी हैं नहीं? आप मेरे राम जी की प्रिय संतान हैं। कृपया दूसरों की गलतियों से परेशान न हों। हमें अपने प्रति सावधान होना है ताकि हम कोई गलती न करें। कभी किसी से कटु वाणी न बोलें। प्रेमपूर्ण व्यवहार रखिए, दीजिए और क्षमा कीजिए। सभी चीज़ों के लिए शुभकामनाएँ। राम राम राम राम दुहराइए। आपको अमृतवाणी का पाठ करना अच्छा लगता है न ! आपको प्यार और आपके माता–पिता को नमस्कार।

# विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
## अप्रेल से जून 2018

फीजी सत्संग के कुछ चित्र

पूजनीय महाराज जी सर्वप्रथम 2003 में फीजी गए। फीजी दिल्ली से लगभग 12000 कि. मी. दूर दक्षिण प्रशांत (साउथ पसिफिक ) में बसे द्वीपों का एक छोटा समूह है। अंग्रेजों ने सन् 1879 में कई भारतियों को गिरमिटिया (Indentured labour) मजदूर बनाकर उनके कई जत्थों को फिजी भेजा। तब से आज तक भारतियों की एक बड़ी संख्या फिजी में रहती आ रही है ।

2003 के पश्चात् महाराज जी 2004, 2006 और 2008 में फीजी गए। वहाँ के विभिन्न द्वीपों; सुवा, नादी, बा और लबासा में महाराज जी ने कई सत्संग किए। 2008 में लबासा में खुला सत्संग भी हुआ। फीजी में एक द्वीप से दूसरे द्वीप जाने के लिए आरामदेह साधन नहीं थे इसलिए महाराज जी को छोटे विमानों (27 सीटोंवाले विमानों से) यात्रा करनी पड़ती थी। परन्तु महाराज जी वहाँ जाना बहुत पसंद करते थे क्योंकि वहाँ के साधकों की श्रद्धा और भक्ति से वे बहुत प्रसन्न रहते थे। 2012 में महाराज जी ने किसी से कहा था, ''फीजी में इतने लोग राम नाम जपते हैं, यह कोई कम उपलब्धि नहीं है।''

इस वर्ष 12–13 मई को लबासा में पांच अमृतवाणी सत्संग हुए। इसके आलावा सुवा में दो दिन के खुले सत्संग का आयोजन हुआ। नादी में सुन्दरकाण्ड का पाठ भी हुआ। कुल मिलाकर 108 लोगों ने नाम दीक्षा ग्रहण की जिनमें वहाँ के कुछ स्थानीय लोग भी थे।

### साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **अहमदाबाद**, गुजरात में 11 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 103 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 13 से 16 मार्च तक परम पूजनीय महाराज जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **हरिद्वार** में 27 मार्च से 1 अप्रेल तक परम पूजनीय स्वामी जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **मंडी**, हिमाचल प्रदेश में 1 अप्रेल को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 29 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बैतून**, मध्य प्रदेश में 7 अप्रेल को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 61 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ज्वाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 481 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भरहेड़ी**, हिमाचल प्रदेश में 15 अप्रेल को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 80 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **आलमपुर**, हिमाचल प्रदेश में 18 अप्रेल को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 75 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बिचपुर**, आगरा, उत्तर प्रदेश में 6 मई को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 77 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **डीडवाना**, राजस्थान 6 मई में को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 288 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फीजी** में 6 मई को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 108 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा में 25 मई को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 116 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **शुक्रताल,** उत्तर प्रदेश में 26 मई को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 105 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चम्बी**, नगरी, हिमाचल प्रदेश में 27 मई को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 20 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **किश्तवाड़**, जम्मू एवं कश्मीर में 9 जून को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 29 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भद्रवाह**, जम्मू एवं कश्मीर में 10 जून को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 73 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश में, 14 से 16 जून तक तीन दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें दूर दूर के शहरों से साधक सम्मिलित हुए। 16 जून को नाम दीक्षा हुई।
- **सैर्ल्सबर्ग**, अमेरिका में 28 से 30 जून तक दो रात्री खुला सत्संग लगा जिसमें 28 जून एवं 30 जून को नाम दीक्षा हुई।
- **दिल्ली**, श्री रामशरणम् में मार्च, अप्रेल एवं मई में साप्ताहिक सतसंग के पश्चात् 121 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, श्री रामशरणम् में 27 जुलाई को गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में प्रातः 6 से 7 बजे पुष्पांजलि होगी। 7 से 8.15 बजे तक श्री अमृतवाणी, भजन व प्रवचन होगा। सारा दिन हाल खुला रहेगा। सायं 4 बजे नाम दीक्षा होगी। सायं 5.30 से 7 बजे तक श्री अमृतवाणी, भजन व प्रवचन होगा। सायं 7 बजे पूर्णिमा का जाप आरम्भ होगा जिसकी पूर्ति 28 जुलाई प्रातः 7 बजे होगी।

## निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **औबेदुल्लागंज**, मध्यप्रदेश नव निर्माणाधीन श्री रामशरणम् का कार्य तीव्र गति से हो रहा है। इसका उद्घाटन 7 सितम्बर, शुक्रवार को होगा। यह स्थान भोपाल से होशंगाबाद नेशनल हाईवे पर, भोपाल से लगभग 35 कि.मी. दूर साधनधाम परिसर, गुरुद्वारे के पास स्थित है।
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में श्री रामशरणम् भवन का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है और columns खड़े हो गए है। ■

(संशोधन :
(1) अप्रैल 2018 के सत्य साहित्य के पृष्ठ 13 पर नामरुप में हुए सत्संग का वर्णन था परन्तु इस सम्बन्ध में जो चित्र छपा था वह नामरुप का नहीं बल्कि बांसगहन, मध्यप्रदेश का था।
(2) पृष्ठ 13 पर निर्माणाधीन श्री रामशरणम् की प्रगति का विवरण अबदुल्लागंज का था।
इन त्रुटियों के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।) ■

# 'प्रार्थनामय शब्दों ने मंत्र का काम किया'

मनुष्य बैखरी वाणी से बोलते हैं। मन में जो चिन्तन होता है वह मध्यमा वाणी है। देवता पश्यन्ती से बोलते हैं। 'परा' और 'बैखरी' एक वाणी के दो सिरे हैं। जिसने पश्यन्ती को जाना वह देव पद पर आ गया।

स्वामी जी महाराज द्वारा परिभाषित, छान्दोग्योपनिषद् के निम्नलिखित अंश वाणी के प्रसंग में: मनुष्य जब ही चिन्तन करता है, तभी संकल्प करता है। प्रथम स्फुरण चित्त में होती है। फिर मनन करता है। तदन्तर वाणी को प्रेरता है और फिर उस वाणी को नाम में –शब्दों के जोड़ने में – स्मृति के तार में प्रेरित करता है। (एकादशोपनिषत्संग्रह, 1, पृ 324)

इसी प्रकार मेरे गुरु परम पूजनीय प्रेम जी महाराज की वाणी मेरे जीवन में प्रेरक वाणी सिद्ध हुई।

सन् 1969 में पिता का देहान्त हो गया। वियोग का दुःख स्वाभाविक ही था। दुःख विकराल होने लगा। यह विचार आने से कि मेरे से पिता के प्रति सेवा में अज्ञानवश चूक हुई, इस व्यथा ने मुझे विह्वल कर दिया। प्रेम जी महाराज के सन्मुख व्यथा का वर्णन किया। प्रेमपूर्वक सांत्वना देकर बोले,''जब–जब भी पिता जी का विचार आए तो यह प्रार्थना करो–'परमेश्वर पिता जी की आत्मा का मंगल हो, कल्याण हो'।'' प्रार्थनामय शब्दों ने मंत्र का काम किया। प्रभाव तुरन्त आरम्भ हो गया। हीन भावना मिटने लगी। महाराज जी की शाब्दिक प्रार्थना से दोष दृष्टि अल्पकाल में लुप्त हो गई और स्वयं की दृष्टि में महिमावान होने का आभास होने लगा। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का सूक्ष्म विचार शाब्दिक प्रार्थना में व्यक्त हो कर मेरे अन्तःकरण में अवतरित हो गया। है न उनके संकल्प और वाणी का चमत्कार।

छान्दोग्योपनिषद् का वाक्य : आत्मा से चित्त, आत्मा से संकल्प, आत्मा से मन, आत्मा से वाणी, आत्मा से नाम, आत्मा से श्रुतियाँ, आत्मा से कर्म और आत्मा से ही यह सब है।

आत्म–ज्ञानी–मुक्तात्मा आत्मा से ही सर्वसिद्धि–संपन्न होता है। उसके आत्मभाव से होने योग्य स्वयं हो जाता है। *(एकादशोपनिषत्संग्रह, 1, पृ 340)*

श्री प्रेम जी महाराज के मुखारविन्द से (गीता भाष्य रचना के संदर्भ में) महाराज(स्वामी जी) के सद्ग्रन्थ तो अवतरित हैं। वे लिखने बैठते थे, आदेश आते जाते थे। जहाँ कलम रुक जाती थी बंद कर देते थे।

स्वामी जी महाराज के संग भी मुझे कुछ व्यक्तिगत अनुभव हुए। सन् 1954 से 1960 तक पूज्य स्वामी जी महाराज के प्रवचन सुनने के अवसर प्राप्त हुए। साधना सत्संग और अन्य स्थानों के अतिरिक्त स्वामी जी महाराज साधारणतया प्रातः दो घंटे का समय इच्छुक साधकों से मिलने का नियत रखते थे। सामूहिक मिलन में ही साधक वार्तालाप करते। व्यक्तिगत, पारिवारिक और व्यवहारिक बातें साधक सरल और अनौपचारिक तरीके से सहज ही कर लेते। मैं मिलने के लिए जाता रहता था इसलिए साधकों के वार्तालाप और स्वामी जी के उत्तर सुनने का अवसर स्वतः प्राप्त हो जाता। उनकी भाषा सत्यता और उत्तमता की पराकाष्ठा ही होती। जैसे उनके लिखित रचनाओं में और प्रवचनों में वैसे ही वार्तालाप में सदा और सदैव आश्चर्यजनक दिव्य परिपूर्णता।

साधारणतः मिलने वाले जन स्वामी जी के सन्मुख अति आदर भाव से अपनी समस्याओं को प्रकट करते। परन्तु अपवाद भी तो प्रकृतिबद्ध और वृत्तिवश होता ही है। एक अपवाद का संस्मरण साधकों से प्रातः संयुक्त मिलन का, जब मैं भी अन्य साधकों के साथ उपस्थित था। एक अधेड़ आयु के व्यक्ति ने अपनी समस्या का वर्णन करते बहुत समय लगा दिया और वह भी अनुचित भाषा में। स्वामी जी महाराज सुनते रहे शान्त स्वभाव से। अन्ततः सरल स्वभाव से मुख पर स्वाभाविक मुस्कान के साथ संक्षिप्त उत्तर दिया,''अनावश्यक वर्णन भी तो एक समस्या ही है।''

स्वामी जी के कथन में प्रेम और सहानुभूति थी। अनुचित बात करने वाला व्यक्ति आहत हुआ नहीं दिखा। वास्तव में सुधारात्मक और उपचारात्मक संदेश को ग्रहण करता हुआ प्रतीत हुआ। दिव्य वाणी का जन व्यवहार जागृत करने वाला आश्चर्यजनक प्रभाव हुआ।

स्वामी जी महाराज की रचनाओं के फल स्वरुप हम सब साधक परमेश्वर की प्रतीति और प्रीति के लिए सर्वसाधन सम्पन्न हैं और सक्षम तो हम उसी दिन ही हो गए जब नाम की दीक्षा लेकर राम नाम को अन्तःकरण में स्थापित कर लिया। ■

# 'प्रभु तो परम कृपालु हैं!'

फीजी की एक साधिका लिखती हैं,''मेरे बेटे ने 12 वीं कलास की परीक्षा में 100 में से 44 अंक प्राप्त किए। पास होने के लिए 6 अंकों की आवश्यकता थी। परीक्षा पत्र को दुबारा चैक करने के लिए भेज कर, मैंने प्रार्थना के रुप में श्री अमृतवाणी का पाठ किया। उसका ऐसा प्रभाव हुआ कि Board of Examiners ने पूरे फीजी के 12 वीं कलास के सभी विद्यार्थियों को 6 अंक और दे दिए। मैंने तो सिर्फ अपने बेटे के लिए कृपा मांगी थी, पर प्रभु राम ने अपनी कृपा फीजी के सभी विद्यार्थियों पर बरसा दी। प्रभु तो परम कृपालु हैं !''

**जैसा जल हो कूप में, वैसा बाहर आय।**
**वाणी का धर वेश ही, बाहर चित्र दिखाय।।**

*(भक्ति प्रकाश, 9, पृ 273)*

  

| Sadhna Satsang (July to December 2018) | | |
|---|---|---|
| Haridwar | 30 June to 3 July | Saturday to Tuesday |
| Haridwar | 22 to 27 July | Sunday to Friday |
| Haridwar | 30 Sept. to 3rd Oct. | Sunday to Wednesday |
| Haridwar (Ramayani) | 10 to 19 October | Wednesday to Friday |
| Haridwar | 11 to 14 November | Sunday to Wednesday |
| Gwalior | 23 to 26 November | Friday to Monday |

| Naam Deeksha in other Centres (July to December 2018) | | |
|---|---|---|
| 28 & 30 June | Thursday & Saturday | Saylorsburg, USA |
| 15-Jul | Sunday | Vidisha, MP |
| 12-Aug | Sunday | Rohtak, Haryana |
| 07-Sep | Friday | Obedullaganj,MP |
| 14-Sep | Friday | Hira Nagar, J&K |
| 16-Sep | Sunday | Rewari, Haryana |
| 23-Sep | Sunday | Jammu, J&K |
| 30-Sep | Sunday | Sydney, Australia |
| 07-Oct | Sunday | Gurdaspur,Punjab |
| 21-Oct | Sunday | Hisar, Haryana |
| 28-Oct | Sunday | Kathua, J&K |
| 04-Nov | Sunday | Pathankot, Punjab |
| 18-Nov | Sunday | Fazalpur, Kapurthala |
| 24 & 25 Nov | Saturday & Sunday | Gwalior, MP |
| 09-Dec | Sunday | Bhiwani,Haryana |
| 09-Dec | Sunday | Bhopal,MP |
| 16-Dec | Sunday | Surat, Gujrat |
| 25-Dec | Tuesday | Dewas,MP |
| 30-Dec | Sunday | Sujanpur, Punjab |

| Open Satsang (July to December 2018) | | |
|---|---|---|
| Delhi | 28 to 29 July | Saturday to Sunday |
| Rohtak | 11 to 12 August | Saturday to Sunday |
| Rewari | 15 to 16 September | Saturday to Sunday |
| Jammu | 21 to 23 September | Friday to Sunday |
| Sydney | 29 to 30 September | Saturday to Sunday |
| Gurdaspur | 5 to 7 October | Friday to Sunday |
| Hisar | 20 to 21 October | Saturday to Sunday |
| Kathua | 28 October | Sunday |
| Pathankot | 3 to 4 November | Saturday to Sunday |
| Fazalpur, Kapurthala | 17 to 18 November | Saturday to Sunday |
| Bhiwani | 8 to 9 December | Saturday to Sunday |
| Bhopal | 11-Dec | Tuesday |
| Surat | 15 to 16 December | Saturday to Sunday |
| Dewas | 25-Dec | Tuesday |
| Sujanpur | 29 to 30 December | Saturday to Sunday |

| Poornima ( July to December 2018) | | |
|---|---|---|
| 27 | July | Friday |
| 26 | August | Sunday |
| 25 | September | Tuesday |
| 24 | October | Wednesday |
| 23 | November | Friday |
| 22 | December | Saturday |

| Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam, Delhi (July to December 2018) | | |
|---|---|---|
| 27 July | Friday | 4 .00 PM |
| 26 August | Sunday | 10:30 AM |
| 23 September | Sunday | 10:30 AM |
| 21 October | Sunday | 10:30 AM |
| 11 November | Sunday | 11.00AM |
| 23 December | Sunday | 11.00AM |

# मीठी वाणी का महत्व

किसी नगर में एक बहुत अच्छे साधु अपने कुछ शिष्यों के साथ रहते थे। उनकी वाणी अत्यन्त मधुर थी तथा आचरण भी बहुत सरल एवं सात्विक था। लोग उनके पास आकर बहुत शान्ति का अनुभव करते थे।

एक दिन एक व्यापारी साधु के पास आया, वह बहुत ही क्रोध में था। उसका एक मात्र पुत्र घर छोड़ कर साधु के आश्रम में आकर रहने लगाा था। उस व्यापारी ने आते ही साधु के ऊपर अपशब्दों की बौछार शुरु कर दी। उसने कहा, तुम अपना ढोंग बन्द करो अन्यथा मैं तुम्हारा आश्रम तहस नहस कर दूँगा। वह साधु को बुरे वचन कहता रहा, किन्तु साधु के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह पहले की तरह शान्त स्वभाव से मंद–मंद मुस्कुराते रहे। यह देखकर व्यापारी को और क्रोध आ गया और वह अधिक कुवचन बोलने लगा।

अंत में जब वह बोलते बोलते थक गया, तब साधु ने कहा, क्या तुम यह जानते हो कि जो शब्द व्यक्ति के मुँह से निकलता है, वह बाहर आने से पहले ही, जिह्वा को स्पर्श करता है और उसके क्रोध की अग्नि पहले उसे ही जलाती है ? कटु शब्द दूसरों पर जैसा भी प्रभाव डाले, किंतु बोलने वाले के मुंह को पहले कड़वा करता है। क्या तुम्हारा मुंह का स्वाद कसैला नहीं है? व्यापारी ने पाया कि वास्तव में उसके मुंह का स्वाद कसैला था, वह सूख रहा था और उसका शरीर क्रोध से कांप रहा था। साधु ने फिर कहा, ''तुम अपनी दशा देखो और अब अपने पुत्र को देखो।''

व्यापारी ने खिड़की के बाहर आश्रम के बगीचे में अपने पुत्र को मस्ती में भजन गाते हुए काम करते देखा। फिर क्या था, व्यापारी शर्म से पानी पानी हो गया और उसके मन में भी साधु के प्रति श्रद्धा व स्नेह जाग गया। इसके पश्चात् वह भी आश्रम का सदस्य बन गया। मधुर वाणी सभी को तृप्त करती है और कटु वाणी स्वयं को तथा सभी को कष्ट देती है।

  

**नहीं वचन का मोल है, यह हीरा अनमोल।**
**बोल बोलने से पुरा, मुख में उसको तोल।।**

*(भक्ति प्रकाश, 6, पृ 153)*

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.



ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924